द्वितीय सेमेस्टर (एमए) हिन्दी

संस्कृत साहित्य का इतिहास

PAPER CC – 7

संस्कृत नाटक के विकास में शूद्रक, विशाखदत्त एवं अन्य नाट्यकारों का योगदान

➢ शूद्रक : "मृच्छकटिक"= मृत + शकटिक = "मिट्टी की गाड़ी"

10 अकों के प्रकरण नाटक 'मृच्छकटिक' के रचनाकार शूद्रक के व्यकितत्व एवं समय के संबंध में भारी विवाद है। अनेक किवदंतियाँ संस्कृत के विद्वानों के बीच शूद्रक को लेकर प्रचलित है। इस नाटक की कथा चारूदत्त (नायक), वसंत सेना (नायिका), शकार, विटकर्णपूरक, शार्विलक आदि को लेकर लिखी गई है और प्रधानतः एक नगरीय जीवन की प्रेमकथा है। यह अत्यंत वैविदधपूर्ण, रोचक और व्यवहारिक जीवन से ली गई कथा है जो नाटक में पात्रों के पारस्परिक संबंधों और क्रमशः घटित घटनाओं के घात–प्रतिघात से कुशलतापूर्वक आगे बढ़ती हुई अपनी परिणति प्राप्त करती है।

चारूदत्त एक आदर्श सद्गृहस्थ है जो एक पत्नीव्रत होते हुए भी परंपरागत अभिजात्य के पोषक वारवनिता सम्पर्क से दूर नहीं रहता। उसके चयन का विषय एक मुग्ध वारवनिता वसंतसेना है जो चारूदत्त के सद्गुणों पर रीझकर अपने धंधे को छोड़ देती है। चारूदत की पत्नी इतनी

उदार और उदात्तमना है कि सब जानती हुई भी अपने पति के विनोद में बाधक नहीं बनती। नाटक के पात्रों और में भास में नाटक 'चारूदत्त' से थोड़ी बहुत समानता है। इस नाटक में सामंती नागरिक जीवन का अत्यंत प्रामाणिक और विस्तृत चित्रण प्राप्त होता है।

- विशाखदत्त : "मुद्राराक्षस"

मौखरिवंश के अवंतीवर्मा के समय में (छठी शती उत्तरार्ध) विशाखदत्त उपस्थित थे। वे पाटलिपुत्र के वातावरण से पूर्णतया परिचित जान पड़ते हैं। नाटक में उन्होंने पाटलिपुत्र के जिस वैभव का चित्रण किया है वह इतिहाससम्मत है। यह नाटक इतिवृत की दृष्टि से संस्कृत नाटकों में अद्वितीय इस कारण माना जाता है कि राजनीतिक और कूटनीतिक विषय पर संस्कृत में इसकी बराबरी का दूसरा नाटक नहीं मिलता।

चाणक्य नंद वंश का उन्मूलन करके चन्द्रगुप्त मौर्य को मगध के सिंहासन पर प्रतिष्ठित कर विरोधी नंदवंश के स्वामी भक्त मंत्री राक्षस को अपनी कूटनीतिक चालों द्वारा वश में करके उसे चन्द्रगुप्त का मंत्री बनाना चाहता है। अंततः वह अपने बुद्धि बल द्वारा दोनों योजनाओं में सफल हो जाता है। विशाखदत्त ने बड़े ही सूक्ष्म ढंग से जटिल कथानक का 7 अंकों में निर्वहन किया है। इसके तेजी से बदलते दृश्य, कुशलता से संबद्ध किए गए हैं। कार्य की एकता की दृष्टि से यह नाटक अद्वितीय है। "मृच्छकटिक" की थोड़ी–बहुत छाप के बावजूद नाटककार अपनी वैयक्तिकता को पूरी तरह बनाए रख सका है।

'मुद्राराक्षस' का प्रधान रस 'वीर' है जिसका स्थायी भाव 'उत्साह' प्रायः सभी पात्रों में छलक पड़ता है। शैली ओजस्विनी होने पर भी सरल है और उसमें लम्बे समासों का अभाव है जो एक विशेषता है। सभी घटनाएँ चरम लक्ष्य की ओर सीधी बढ़ती है।

➢ हर्षवर्धन :

सातवीं शती पूर्वार्ध के महाराज हर्षवर्धन के तीन रूपक प्राप्त होते हैं:– 1. रत्नावली, 2. प्रियदर्शिका, 3. नागानंद

'रत्नावली' चार अंकों की रचना है जिसमें महाराज उदयन और सिंहल देश की राजकुमारी रत्नावली की प्रेमकथा है। सजीव घटनाओं और नाटकीय संवादों से यह प्रेमकथा प्रभावशाली बन गयी है।

"प्रियदर्शिका" भी चार अंकों की एक नाटिका है जिसमें महाराज उदयन और राजा दृढ़वर्मन की पुत्री प्रियदर्शिका की प्रणय–कथा चित्रित है। दोनों रूपकों में विषय और स्वरूप की दृष्टि से एक समानता है और दोनों पर कालिदास के "मालविकाग्निमित्र" का प्रभाव दिखाई पड़ता है।

'नागानंद' नाटक में पाँच अंक है और इसका पूरा कथानक भी उच्च कोटि का है। पूर्वार्ध में विद्याधर कुमार, जीमूतवाहन और सिद्धकन्या मलय कुमारी की प्रेमकथा अंकित है और उत्तरार्ध में जीमूतवाहन द्वारा गरूड़ के सर्पभक्षण त्याग की उत्सर्गमयी कथा है। इस तरह इसमें प्रेमकथा के अनंतर आत्मज्ञान के उज्जवल आदर्श की प्रस्थापना है। यह रूपक हर्ष के

उत्तरकालीन जीवन की रचना है जब उन्होनें बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिया था। हर्ष ने अपने रूपकों की रचना वैदर्भी रीति में की है। अतः शैली सरल और प्रसाद गुण युक्त है। उनके मित्र और सभाकवि बाण का प्रभाव गद्य शैली पर नहीं पड़ा। प्रकृति के सौंदर्य वर्णन में हर्ष निष्णात दिख पड़ते हैं।

➢ भवभूति :

कालिदास के बाद संस्कृत के सर्वश्रेष्ठ नाटककार भवभूति माने जाते हैं। ये सात 700 ई0 के आसपास विद्यमान थे। इनका मूल नाम श्रीकंठ था और शिव के उपासक होने के कारण भवभूति उनका विरूद (उपाधि) था। वे व्याकरण, न्याय, मीमांसा, साहित्य, उपनिषद्, सांख्य, योग आदि के प्रकाण्ड पंडित थे। उनके तीन रूपक हैं :

1. महावीरचरित, 2. मालतीमाधव, 3. उत्तरराम चरित नाटकों का रचनाक्रम भी यही है।

'महावीरचरित' में राम के जीवन की घटनाएँ सीता के विवाह से लेकर उनके राज्याभिषेक तक कि कथा 7 अंकों में निबद्ध है। प्रमुख विषय है–राम को नष्ट करने के लिए किए गए रावण के प्रयत्नों की विफलता और राम का सकुशल अयोध्या लौट आना। इस नाटक के विविध अंकों में रामकथा की घटनाएँ समास शैली में कुशलतापूर्वक विन्यस्त है।

दस अंकों के नाटक "मालतीमाधव" में एक मार्मिक प्रणयकथा का नाटकीय अंकन है। पद्मावती नरेश की कन्या मालती का विदर्भ नरेश के मंत्री देवरात के पुत्र माधव से विवाह के बीच की घटनामयी कथा का विस्तार दिखाई पड़ता है।

'उत्तररामचरित' में रामायण के उत्तरकाण्ड की कथा का नाटकीय संयोजन है। सीता वनवास और राम का वियोग, बाल्मीकि आश्रम में सीता का गर्भावस्था में निवास और लव–कुश का जन्म, दोनों का परिपालन एवं क्षत्रियोचित शिक्षण आदि की घटनाएँ नाटक में अंकित है। लव कुश द्वारा अश्वमेध अश्व को पकड़ लेना और शत्रुघ्न के साथ उनका युद्ध करना भी यहाँ अंकित है। राम द्वारा किए जा रहे यज्ञ में रामकथा का अभिनयपूर्वक गायन भी यहाँ अंकित है। अंततः राम लव–कुश को अपने पुत्रों के रूप में पहचान पाते हैं और बाल्मीकि उन्हें राम को सौंप देते हैं।

भवभूति ने नाट्यकला को उत्सर्ग पर पहुँचाते हुए अनेक तरह की विलक्षणताएँ उपस्थित की है। कवित्त्व की दृष्टि से उत्तरामचरित एक अपूर्व रचना है किन्तु नाटकीयता की दृष्टि से अपेक्षाकृत कम सफलता रचनाकार को प्राप्त हो सकी है। भवभूमि करूणा को ही मूल रस मानते हैं और उनके नाटकों में करूणा का यह स्वाभाविक ताना–बाना आदि से अंत तक छाया रहता है। उनकी करूणा वह है जो सीधे बाल्मीकि से जा जुड़ती है।

कुल मिलाकर भवभूति कवित्त्व के उन्मेष अपनी नाट्यकला का भी अतिक्रमण करते दिखाई पड़ते हैं।

➢ भट्टनारायण :

आठवीं शती के भट्टनारायण ने "वेणीसंहार" नामक नाटक की रचना की। छह अंकों में निबद्ध इस नाटक की कथा महाभारत पर आधारित है। दुःशासन के हाथों अपमाणित द्रौपदी की वेणी का दुर्योधन–वध के बाद भीम के द्वारा रक्तरंजित हाथों से बाँधा जाना "वेणीसंहार" की आधारशिला है। नाटक में भीम की अपेक्षा दुर्योधन ही अधिक महत्वशाली बनकर सामने आता है किन्तु नाटक की मूल घटना का संबंध भीम से होने के कारण तथा उसके द्वारा इतिवृत का निर्वहन होने के कारण भीम को ही नायक मानना युक्ति संगत है।

भट्टनारायण एक कुशल नाटककार हैं। नाटक में उन्होंने नाट्यशास्त्र की कितनी ही प्रविधियों का परिचय दिया है। यह एक घटना प्रधान नाटक है किन्तु बीच–बीच में पद्यों की अधिकता और वर्णनों की दीर्घता के कारण नाटकीय गति लड़खड़ा जाती है। इस कृति का अंगी रस वीर हैं। भट्टनारायण की शैली ओजपूर्ण और समास बहुल है।

संस्कृत में ऐसे भी पर्याप्त रूपक लिखे गए हैं जिनमें अमूर्त गुणों अथवा भावों को पात्रों के रूप में उपस्थित किया गया है। इन्हें "प्रतीकात्मक रूपक" कहा गया है। जैसे कृष्ण मिश्र का "प्रबोध चंद्रोदय"।

संस्कृत में छाया रूपक भी प्राचीन काल से ही प्राप्त होते हैं जिसमें गत्ते की मूर्तियाँ बनाकर पर्दे पर प्रदर्शित की जाती है। आजकल की

कठपुतली नाट्य इसी परिकल्पना से विकसित है। जैसे–रामदेव का "सुभद्रा प्रणय"।

सन् 1922 में प्रकाशित "चतुर्भाणि" नामक संग्रह में 4 एकांकी हैं। इन एकांकियों की विशेषता यह है कि ये सामान्य जन जीवन की भाषा में सामान्य प्रसंगों को लेकर तथा जन–साधारण से पात्रों को लेकर लिखी गई है। एक तरह से इन्हें प्रहसनमूलक एकांकी भी कह सकते हैं। शुद्ध प्रहसन भी खूब मिलते हैं। जैसे–महेन्द्रविक्रमवर्मा का "मत विलास" (7वीं शती)।

बौद्धों और जैनों के द्वारा भी अनेक रूपक लिखे गए जो धार्मिक विषयों और प्रसंगों के अतिरिक्त वैदिक पौराणिक धर्म का उपहास भी उड़ाते हैं।

प्रस्तुतकर्ता
आयुषी रॉय
अतिथि शिक्षक
हिन्दी विभाग,
पटना विश्वविद्यालय, पटना
E-mail Id :
ausheeroy.roy@gmail.com